Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-26-30

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

**Online ISSN : 3048-4537**
March 2024 : 1(2)26-30
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

**डॉ. लालसिंह पुरोहित**
गाँव – जावला, वाया – डेगाना
जिला – नागौर, राजस्थान 341503
सम्पर्क-9314291417
मेल ID- lalsinghpurohit@gmail.com

Corresponding Author :

**डॉ. लालसिंह पुरोहित**
गाँव – जावला, वाया – डेगाना
जिला – नागौर, राजस्थान 341503
सम्पर्क-9314291417
मेल ID- lalsinghpurohit@gmail.com

# डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली के नाटकों में नारी चित्रण

सृष्टि के सभी प्राणियों में मनुष्य परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ सर्जन है। मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का जितना योगदान रहा है, उतना शायद किसी भी तत्त्व का नहीं रहा। हिंदी नाटक साहित्य के क्षेत्र में डॉ.बद्रीप्रसाद पंचोली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक साहित्य के विशाल पट पर अनेक परिवर्तन और परिवर्धन का दौर चला है। हिंदी नाटकों पर पाश्चात्य शैली के समस्या नाटकों का अंधा प्रभाव परिलक्षित होने लगा। भारतेन्दु और प्रसाद की नाट्य शैली को विस्मृत कर नाट्यकर्मी पश्चिमी विचारधारा का अंधानुकरण करने लगे। इस काल के प्रायः सभी नाटककार समस्यामूलक रचनाओं के लेखन में संलग्न थे। रचनाकार भारतीय मर्यादाओं का खुले तौर पर उल्लंघन कर रहे थे। डॉ.बद्रीप्रसाद पंचोली ने आत्मीय संस्कार, मानवीय संयम और लेखकीय सहजता से अपनी रचनाओं को मूर्त रूप दिया।

डॉ.बद्रीप्रसाद पंचोली की नाट्य रचनाएँ अतीत के गौरवशाली संदर्भों को वर्तमान से जोड़कर समाज को नए मानव मूल्यों एवं राष्ट्रीय संवेदनाओं से संपन्न कर रही है। इनका नाट्य साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य का शुद्ध और सात्विक स्वरूप है। श्री पंचोली के नाटक अपनी सहजता, सरलता और सुबोधता के कारण हिंदी नाट्य जगत में स्थान प्राप्त कर चुके हैं। पंचोलीजी ने नारी प्रधान नाटक लिखकर हिंदी साहित्य जगत में नई परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने अपने नाटकों में नारी को किसी भी दृष्टि से पुरुष से कम नहीं माना है। नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र रक्षा में तत्पर नजर आती है तो त्याग की प्रतिमूर्ति भी वह बनती है।

पंचोली द्वारा लिखित नाटक 'ध्रुवश्री' नायिका प्रधान नाटक है। इस नाटक में ध्रुवश्री के उत्कट समर्पण व राष्ट्रप्रेम को प्रस्तुत किया है। वह पुरुष वेश में रहकर शत्रुओं के समाचार प्राप्त करती है। ध्रुवश्री अपने कर्तव्य के प्रति सजग है। वह शत्रु के साथ होने पर भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटती है देश की स्वतन्त्रता को बचाने के लिए वह उससे विद्रोह करती है। जब दैमैत्रेय खारवेल को धोखे से मारना चाहता है तो वह अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए खारवेल की रक्षा करती है।

ध्रुवश्री सुंदरता की प्रतिमूर्ति है। राजा खारवेल उसके इसी सौंदर्य और आवाज की मासूमियत को देखकर उस पर आकर्षित हो जाता है। उसका छोटा सा मुखमण्डल ऊपर से पुरुष वेश उसमें भी वह खारवेल को आकर्षित किए बिना नहीं रहती। अग्निमित्र भी उसके रूप सौंदर्य पर आसक्त हो जाता है। ध्रुवश्री अपने देश के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। वह दैमैत्रेय की नीति को पहचान जाती है और अपने देश को उसके चंगुल से बचाने के लिए पुष्यमित्र व खारवेल का साथ देती है। युद्ध में लड़ते-लड़ते वह बेहोश हो जाती है किंतु देश-प्रेम की भावना उसे पीछे हटने नहीं देती।

उसकी देशभक्ति के संबंध में अग्निमित्र प्रशंसा करता हुआ कहता है- "यह तो पता नहीं चला; पर यदि वह यवन है तो उसकी भारत के प्रति भक्ति को देखते हुए उस पर शत-शत भारतीयों को न्यौछावर करने की इच्छा होती है।"[1]

ध्रुवश्री निर्भीक एवं साहसी नारी है। वह दुश्मन के खेमे में रहकर भी अपने देश तक सूचना पहुँचाती है। वह अपने साहस एवं वीरता का परिचय उस समय देती है जब दैमैत्रेय खारवेल को घेरने के लिए अपने सैनिकों को कहता है और वह खारवले की ढाल बनकर खड़ी हो जाती है।

ध्रुवश्री सच्ची प्रेमिका है। राजा खारवेल उसकी प्रेरणा से मगध पर आक्रमण करने का विचार दिमाग से निकाल देता है और उसके साथ मैत्री भाव रखता है। युद्ध के दौरान ध्रुवश्री खारवेल की प्रेम भावना को देखकर उसके प्रति आकर्षित हो जाती है। वह उससे प्रेम करती है। प्रेम के संबंध में एक उदाहरण द्रष्टव्य है- "जिसने अपनी महत्त्वकांक्षाओं को राष्ट्रनिष्ठा के सामने नगण्य समझा, उस हृदय-सम्राट पर मेरे जैसे अनेक जीवन न्यौछावर किए जा सकते हैं। हे भगवान! वह सुरक्षित है न? मेरे सपनों ने अभी तो उसके सानिध्य में चार पैर चलना भी नहीं सीखा। उसके पहले ही यह कैसी विपत्ति आ गई! प्रभो, मेरे खारवेल को बचाना। जीवन की यही एक मात्र आकांक्षा है।"[2]

पंचोलीजी द्वारा लिखित एक और नाटक 'नींव के स्वर' में महाराणा प्रताप की पत्नी जो चित्तोड़ की महारानी है उनके ममत्व को दर्शाया गया है। हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात प्रजा को संभालने का कार्य महारानी ने बखूबी निभाया है। महारानी, महाराणा प्रताप की धर्मपत्नी है। वह त्याग, सेवा, स्नेह, देश-भक्ति, प्रजा-वत्सल आदि गुणों से युक्त है। इस नाटक में 'महारानी' इस नाम से ही संबोधित किया गया है। महारानी ममता की साक्षात मूर्ति है। वह अपनी प्रजा के प्रति ममता का भाव रखती है। वह प्रजा को अपने पुत्र व पुत्रियां मानती है। उन्हें अपनी संतान के समान स्नेह करती है। महारानी का यह वाक्य इसकी पुष्टि करता है- "(गर्व से तनकर) नूरी मेरी बेटी है। मैंने अपनी कोख से पैदा नहीं किया तो क्या हुआ? वह मेरी मानस पुत्री है।"[3]

वह अपनी प्रजा पर आऐ संकट से दुखी हो जाती है, वह कहती है- "..... मेरे सुख-दुःख के केन्द्र तो मेवाड़ के नर-नारी है। उन पर विपत्ति आऐ और मैं रो भी न पाउं। कैसी विडम्बना है? फिर कैसे व्यक्त करूं अपने मन की बात?.....।"[4]

महारानी प्रजा वत्सल है। वह अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करती है। बिना भेद-भाव के प्रजा से प्रेम करती है। वह प्रजा की रक्षा करना अपना कुलव्रत मानती है। वह कहती है- ".....मेवाड़ की प्रजा हमारी संतान है। उसकी रक्षा करना हमारा कुलव्रत है। उसका पालन करने में हम कहीं पीछे न रह जाएँ, भगवान ऐसा सामर्थ्य हमें दे।"[5]

महारानी सेवा की भावना से ओतप्रोत है। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद महारानी गांव-गांव जाती है, तथा युद्ध के दौरान पीड़ित हुऐ लोगों की सेवा करती है। चम्पादे के प्रश्न का उत्तर देती हुई महारानी कहती है- "मैं परेशान कहां हूं मेवाड़-वासियों की परेशानी देखने और दूर करने के लिऐ ही घर से निकली हूं ..... पहले तुम्हारे लिऐ पथ्य की व्यवस्था करती हूँ मांद के मारे तुमने खाया भी तो कुछ नहीं

होगा। आस-पास कोई गाय देखती हूं दूध निकालकर तुमकों पिला दूं औषधि भी .....।"[6]

महारानी वीर क्षत्राणी है। वह अपने आपको किसी भी प्रकार से निर्बल नहीं समझती है। निर्भय होकर गांव-गांव घूमती है। वह क्षत्राणी धर्म निभाने के लिए तत्पर रहती है। वह कहती है- "युद्ध में स्वामी को तिलक करके, आरती उतारकर भेजा था मैंने। युद्ध के परिणाम से क्षत्राणी नहीं घबराती। भाग्य से लड़ने के लिऐ भी तैयार रहती है, पर.....। अधीर नहीं हूं पितः। केवल जानकारी पाने के लिऐ उत्सुक हूँ। क्षत्राणी हूँ। भविष्य कितना ही विकराल हो, सामना कर सकती हूं ....."[7]

महारानी पतिव्रता स्त्री है। वह सच्ची सहधर्मचारिणी है। युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप के नहीं लौटने पर वह व्याकुल हो जाती है। महाराणा प्रताप कहते हैं कि मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिऐ राजकीय सुख छोडक़र तुम्हें वन में कष्ट भोगना पड़ा, तब महारानी का कथन प्रशंसनीय है। "स्वामी! कैसी बातें करते हैं आप? मैं आपकी सहधर्मचारिणी हूँ। कठिन परिस्थितियों से एक साथ मिलकर जूझे है हम लोग। पत्नी तो पति की छाया होती है। भगवान राम का साथ माता सीता ने दिया था,उसी तरह की राह मैंने अपनाई है। इसमें अनहोनी क्या हुई?"[8]

पंचोलीजी द्वारा लिखित 'सुखी परिवार' नाटक में सुखी परिवार में महिला की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस नाटक में धन्य और गोपा के माध्यम से बात को आगे बढ़ाया गया है। गोपा धन्य की धर्मपत्नी है। गोपा श्रम करने में धन्य से किसी भी प्रकार से कम नहीं है। वह धन्य का खेती-बाड़ी में सहयोग करती है। बीज बोना, पशुओं को पानी पिलाना आदि। गोपा परिश्रम में ही सुख का अनुभव करती है। गोपा परिवार हितैषी गृहिणी है। वह हमेशा परिवार के सुख की कामना में रत रहती है। वह कहती है- "अपनों के लिए श्रम करना भार नहीं लगता। बड़ा से बड़ा कष्ट सहने में सुख मिलता है।..... परिवार इसी को कहते हैं। मैं कहीं नहीं, हम ही हम। हम सबके प्यारे, सब हमारे प्यारे। सारी दिशाएं हमारी मित्र। हमारी गति में मिठास; हमारी स्थिति में मिठास।"[9]

गोपा स्वच्छता को महत्त्व देती है। वह हमेशा घर को साफ-सुथरा रखती है। उसका मानना है कि अतिथि देवता कह कर नहीं आते, देवता का स्वागत सजे-धजे घर में ही किया जाता है। स्वच्छता तो परमात्मा की उपासना का ही नाम है। घर को देव मंदिर की तरह पवित्र और स्वच्छ रखना चाहिए। गोपा ईश्वर में आस्था रखने वाली महिला है उसका मानना है कि हमारा प्रत्येक कर्म ईश्वर के निमित्त होना चाहिए। परिश्रम का फल प्रभु देता ही है। वह कहती है-''वाह! कितनी अच्छी बात कही। काम करो और परमात्मा को सौंप दो। जिसकी कृपा से काम पूरा हुआ, वह उसी का है। उसको सौंपने पर प्रसन्नता होगी ही। .....उसका काम करने में अपनी ओर से कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। "[10]

गोपा समाज को महत्त्व देती है। वह कहती है कि समाज के साथ हम जुड़े हुए हैं। समाज में रहकर ही हम त्याग की भावना सीखते हैं। गोपा कहती हैं-''वह हमें उन्नति का अवसर देता है। हमारा कर्तव्य है कि सबको साथ लेकर उन्नति करें। पिछड़े को साथ लें। गिरे हुए को उठाएं। बढ़ते हुए में उमंग जगाएं। साहस टूटने पर धीरज बंधाएं। .....सहयोग और सहानुभूति से हमारी पहचान होती है। सेवा से हम ऊँचे उठते हैं। प्रेम से हम दूसरों से जुड़ते हैं। सत्य से हमारी ऊँचाई का पता लगता है।''11

पंचोलीजी द्वारा लिखित नाटक 'लहर-लहर मधुपर्क' में राजा पौरुष की पत्नी कल्याणी के साहसिक चरित्र को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत नाटक में कल्याणी राजा पौरुष की धर्मपत्नी है। कल्याणी चरित्र के उज्ज्वल पक्ष को लेकर प्रस्तुत हुई है। महारानी कल्याणी वीर क्षत्राणी है। वह अपनी वीरता का परिचय उस समय देती है, जब स्त्रियों की इज्जत पर आ बनती है। जब अलक्ष्यदल का सैनिक उसकी इज्जत पर हाथ डालता है तो वह अपनी कटारी निकाल कर अपनी इज्जत की रक्षा करती है। वह प्रत्येक स्त्री को शस्त्र चलाना सिखाती है और अपनी अलग से सेना संगठित करती है। वह कहती है -''सेना तो नाम ही मर्यादा का है। उस मर्यादा में क्या मैं नहीं बंध सकती?''12

महारानी कल्याणी वीर क्षत्राणी होने के साथ-साथ शस्त्र विद्या में भी निपुण है। जब उसे आंभी और अलक्ष्यदल की नीति का

पता चलता है तो वह सारी स्त्रियों को एक जगह बुलाकर आने वाले संकट के लिए आगाह करती है। सभी स्त्रियों के हाथों में तलवार और तीर तरकश थमा देती है। परिणामस्वरूप नदी पार कर रहे शत्रु को स्त्री सेना रोक लेती है। महारानी कल्याणी कर्तव्य पथ पर चलने वाली स्त्री है। वह अपने पति पौरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है। इसके साथ ही अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह करती है। मातृभूमि के सम्मान की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझती है। महारानी कल्याणी पतिव्रता स्त्री है। वह अपने पति पौरुष के अतिरिक्त अन्य पुरुष की कल्पना भी नहीं करती। आंभी उस पर कलुषित दृष्टि रखता है परन्तु वह उसे स्पष्ट मना कर देती है। वह पौरुष से कहती है- "मेरे स्वामी ! मुझे भी संसार की कोई शक्ति आपकी पत्नी होने के सौभाग्य से वंचित नहीं कर सकती।"[13]

पंचोलीजी के नाटक 'अमृत धुले हाथ' में एक माता के विश्वास को प्रकट किया गया है। वह अपने पुत्र प्रेम को अपने आश्रम में निवास करने वाले शिष्यों पर प्रकट करती है। जया आचार्य शाकटायन की पुत्रवधू है। वह युवावस्था में ही विधवा हो जाती है, इसके साथ ही उसका आठ वर्ष का पुत्र भी लापता रहता है। वह अपने श्वसुर के साथ आश्रम में उनका हाथ बंटाती है।

जया राष्ट्र निर्माण की भावना से ओत-प्रोत है। वह आश्रम में रहने वाले विद्यार्थियों को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का बोध कराती है। जया विद्यार्थियों को शक्ति अर्जन और धनार्जन की शिक्षा देती है। वह उनको बताती है कि सशक्त नागरिकों से ही सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण होता है। जया में राष्ट्र निर्माण की भावना कूट-कूट कर भरी है। निम्न पंक्तियों से जया की राष्ट्र भावना स्पष्ट होती है- "आचार्य श्री कहना है कि सशक्त और समृद्ध राष्ट्र ही अपने नागरिकों को संसार में ऊँचा सिर करके आत्मसम्मानपूर्वक जीने का आधार देता है। विश्व में आध्यात्मिक चेतना जगाने वाले राष्ट्र को सशक्त व समृद्ध होना ही चाहिए।"[14]

जया ममता की प्रतिमूर्ति है। उसके आंचल में ममता का सागर हिलोरे ले रहा है। जया आश्रम में रहने वाले विद्यार्थियों को माँ के समान ही स्नेह करती है। यदि विद्यार्थियों को किसी प्रकार का दुःख होता है तो वह उन्हे अपने आँचल में छुपा लेती है। जया ममता की असीम देवी है। विद्यार्थी सिद्धनाथ कहता है- "भगवती! आपकी स्नेहच्छाया पाकर हमें क्या नहीं मिल गया? हमें तो पता ही नहीं चल रहा कि हम अपने घर से बाहर आए हैं।"[15] सहनशीलता जया के चरित्र का प्रमुख गुण है। युवावस्था में पति का देहान्त हो जाता है, वह वृद्ध ससुर की सेवा करती हुई इस कष्ट को सहन करती है। जब जया का आठ वर्षीय पुत्र कहीं चला जाता है और ढूँढने पर भी उसका पता नहीं चलता है तो जया अपने मन को समझाकर रखती है और वह इस बात को सहन करते हुए दस साल बिता देती है कि उसका पुत्र लौटेगा।

जया आत्मविश्वासी है उसे अपने आप पर पूरा भरोसा है, उसका पुत्र जयन्त लापता हो जाता है तो वह हमेशा एक ही बात सोचती है कि एक दिन उसका पुत्र जरूर आयेगा और वह शाकटायन से भी यही कहती है कि उसका पुत्र अब भी जीवित है। वह अपने आत्म विश्वास को बनाये रखती है, और नाटक के अंत में उसका विश्वास कायम रहता है। उसे उसका पुत्र मिल जाता है।

देश में राजनैतिक स्वातंत्र्य चेतना के साथ नारी जागरण तथा नारी उत्थान की चेतना भी प्रबल प्रवृत्ति के रूप में उदित हुई है। अतः नाटकों में नारी पात्रों का भी विविध भूमिकाओं में चित्रण किया गया है। नारी को वर्षो से अपमानित तिरस्कृत किया जाता रहा है। पंचोली जी ने नारी स्वतंत्रता, संयुक्त परिवार, प्रेम विवाह का स्वरूप, अन्तर्द्वंद्व, कुंठा, नैतिकता के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण आदि का यथार्थपरक चित्रण अपने नाटकों में किया है।

**संदर्भ :-**

1. ध्रुवश्री-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-53
2. ध्रुवश्री-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-58
3. नींव के स्वर-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-14

4. नींव के स्वर-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-04
5. नींव के स्वर-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-80
6. वही, पृष्ठ-
7 वही, पृष्ठ-
8. नींव के स्वर-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-79
10. सुखी परिवार-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-20
11. सुखी परिवार-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-23
12. लहर-लहर मधुपर्क-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-17
13. लहर-लहर मधुपर्क-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-13
14. अमृत धुले हाथ-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, पृष्ठ-4